Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

अथ सत्यनारायणकथा भाषाटीका प्रारंभः ।

CHECKED 1973

224,225
33248

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीसत्यनारायणव्रत सामग्री

१ कदलीस्तंभाः
२ आम्रपल्लव शाखे
३ पंचपल्लवाः
४ सुवर्णमूर्तिः
५ कलशाः
६ यज्ञोपवीतम्
७ पंचरत्नानि
८ वस्त्रोपवस्त्रे
९ तण्डुलाः
१० कुंकुमम्
११ अबीर
१२ गुलाल
१३ धूप
१४ पुष्पाणि
१५ तुलसीदलानि

१६ नारिकेलफलं
१७ ताम्बूलदलानि
१८ पूंगीफलानि
१९ नानाफलानि
२० माला
२१ पंचामृत पदार्थाः
(दुग्ध, दधि, घृत, मधु, शर्करा)
२२ पुण्याहवाचन कलशौ
२३ भगवदर्थे पीठम्
२४ पीठम्
२५ अंगवस्त्रार्थं रंगाः
२६ दक्षिणार्थे द्रव्यम्
२७ नैवेद्यार्थे प्रसादपदार्थाः
घृत १। शर्करा १।
दुग्ध १। गोधूमचूर्ण १।
कदलीफ०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमते रामानुजाय नमः॥अथ श्रीवृंदावननिवासिश्रीवैष्णवश्रीमद्रंगाचार्यशिष्यनारायणशास्त्रि-कृतभाषा सत्यनारायणकथा लिखे हैं कि, श्रीकृष्णजी जिनके अंतर्यामी लालरंग जिनको वर्तमान मनुष्योंको अमृत बांटते भये सुवर्णके रथमें बैठे चतुर्दशभुवनको देखते भये जगत

श्रीगणेशाय नमः ॥ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ १ ॥ सूर्याय नमः॥ सूर्यमावाहयामि ॥ गंधाक्षतपुष्पं समर्पयामि ॥ एवं

के उत्पन्न करनेवाले जो सूर्यांतर्यामी श्रीमन्नारायण जाते हैं ये जानके सूर्यनारायणकी पूजा करैं ॥ १ ॥ सूर्यनारायणको नमस्कार है आवाहन करैं चंदन चावल पुष्प मिष्टान्न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणा हम समर्पण करौंहौं ऐसें सब ग्रहोंकी पूजा करे हैं देवताओं सब जने आपस में सहनशील करो महान् क्षत्रियोंके अर्थ महान् बडोंके अर्थ महान् तेजवान् राजाओंके निमित्त इंद्रकी इंद्रियोंके लिये इन विष्णुको और यह समुद्रसुत चंद्रमाको याके पुत्रको श्रीलक्ष्मी

सर्वत्र॥इमं देवा असपत्नसुवध्वंमहते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महतेज्यानराज्यायेंद्रस्येंद्रियाय॥ इम-ममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकंब्राह्मणानांराजा॥२॥चंद्राय नमः॥

जीकों अपनो स्वामी जानो ये चन्द्रमाका अंतर्यामी जो श्रीमन्नारायण सो हमारो बृहत्त्वादि-गुणविशिष्ट चेतन्य श्रीमन्नारायणको जाननेवारे जो ब्राह्मण उनको राजा है यासे चंद्रमा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पूजन करै ॥ २ ॥ चंद्रमाको प्रकाशक जो श्रीमन्नारायण ताके अर्थ नमस्कार है ॥
॥ ३ ॥ अग्निमें दाहकशक्तिदाता स्वर्गमें जिनको मस्तक सबके स्वामी पृथ्वीको पति ये मंगलरूप होके जन्म लियो है ये मंगलके अंतर्यामी श्रीमन्नारायण जलको और अनेक प्रकारके

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ॥ अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति ॥ ३ ॥ भौमाय नमः ॥ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च ॥ अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमान-

वीर्यको उत्पन्न करनवारे मंगलांतर्यामी हैं यासे मंगलको पूजन करै ॥ ३ ॥ मंगलके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणके अर्थ नमस्कार है ॥ तुम सबके ज्ञान देनेवारे हो सबके आगे जन्मे ॥ ४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सबके कर भए जो कूवा बावडी इत्यादिकके फलदायक निरोग करो ह्रीं इनमें सब स्थित है पीछेभी सब उत्तरकालमें स्थित है विश्वेदेवा देवता और यजमान सब कल्याण को प्राप्त होय ऐसे बुधके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणकी पूजा करैं ॥ ४ ॥ बुधके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है ॥ अत्यंतकोमल पूजनीय यज्ञ करनेवारोंमें जो प्रकाशक

श्च सीदत ॥ ४ ॥ बुधाय नमः॥ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हा द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ५ ॥

श्रीमन्नारायण प्रकाश करते हैं वेही सब दायक हैं वेही श्रीमन्नारायण बृहस्पतिके अंतर्यामीरूप होके सबमें बसे हैं सत्यस्वरूपहो तुम जन्मे हो ताकारणसे हमारेको चित्रविचित्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन देवो ऐसे वार्णांके पति बृहस्पतिरूप श्रीमन्नारायणकी पूजा करें ॥ ५ ॥ ऐसे बृहस्पति के अंतर्यामी श्रीमन्नारायण के अर्थ नमस्कार है ॥ साक्षात् अन्नस्वरूपतें सबकी रक्षा करे ब्रह्मारूप धारके वेदरूप रसकों पिवावत भए क्षत्रियोंको दुग्ध प्रजापति को सोमल

बृहस्पतये नमः॥ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिमृतेन सत्यमिंद्रियविपानꣳशुक्रमंधस इंद्रस्यैंद्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।६।

ताको कोमलवाणीकरके पिवाते भए सत्यइंद्रियें विशेषमान अमृत शुक्ररूप धार शुक्रके अंतर्यामी जो नारायण इंद्रको अमृत देते भये और इंद्रिये दुग्धमोक्ष से हते इत्यादि देनेसें शुद्ध भगवल्लोकको प्राप्त होताहै ये जान शुक्ररूपधारी जो श्रीमन्नारायण तिनको पूजन करैं॥६॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे शुक्राचारी रूपधारी श्रीमन्नारायण के अर्थ नमस्कार है ॥ शनैश्चरके अंतर्यामी जो श्रीमन्नारायण प्रकाशक जलशायीसो हमको मनवांछित फलकी सिद्धके लिये होवे वोहि शनिरूपधारी विष्णु हमको सब प्रकार से कल्याण देवे ॥ ७ ॥ ऐसे शनैश्चर-

शुक्राय नमः ॥ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवंतु पीतये ॥ शंय्योरभिस्त्रवंतु नः ॥ ७ ॥

शनैश्चरायनमः॥कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा॥कयाशचिष्ठयावृता॥८॥राहवेनमः॥केतुंकृणव

स्वरूपधारी श्रीमन्नारायणके अर्थ नमस्कार है॥सबके स्वामी विचित्ररूपधारी सब भूमिमेंव्यापक सदा वृद्धि जिनकी सबके सखा लक्ष्मीकरके साहित बैठे ऐसे राहुके अंतर्यामी जो श्री-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्नारायण तिनकी पूजा करैं ॥ ८ ॥ ऐसे राहुस्वरूपधारी श्रीमन्नारायणके अर्थ नमस्कार है ॥ केतुरूपधारी सबके ध्वजानके रक्षक सुंदर मरणरहित अत्यंत श्रेष्ठ चतुर सो वे विष्णु अनेक मुखोंके बचन सत्य करनेको जिन्होंने जन्म लीनो ऐसे केतुके अंतर्यामीको पूजन

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे॥ समुषद्भिरजायथाः॥९॥ केतवे नमः॥ गणानां त्वा इत्यनेन गणेशं पूजयेत् ॥ १० ॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः

करै ॥ ९ ॥ ऐसे केतुके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणके अर्थ नमस्कार है ॥ गणानां त्वा इस मंत्रसे गणेशजीकी पूजा करै ॥ १० ॥ बृहत्वादिगुणविशिष्ट चैतन्य श्रीमन्नारायण सबसे पहिले ज्ञानरूपसे थे पीछे सब मर्यादा छोड़के सुन्दर जिनकी कांति ऐसे श्रीकृष्णजी भए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबके वे स्वामी हैं सो वे महाबुद्धिमान् हैं उनके बराबरकी उपमाही हैं इनके भीतर जिनने प्रकाश कीनो सज्जन श्रीवैष्णवोंकी आदिकारण असत् अवैष्णवोंकों नाशक जिनको प्रतिबिंब अर्थात् अवतार धारे ऐसे ब्रह्माके अंतर्यामी श्रीमन्नारायण तिनको

सुरुचो वेन आवः ॥ सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ११ ॥ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यू-

नमस्कार है ॥ ११ ॥ हे विष्णो ! तुम सबके मस्तक हो तुमही सबमें व्याप्त हो सब प्रत्ययोंमें स्थित हो विष्णुस्वरूपी हो व्यापक हो निश्चयकरके तुम तप्तशंखचक्रधारी श्री वैष्णव हो सब में तुमही व्यापक हो यासें बाहर भीतर समस्त एकसें हो यासे तुम्हें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमस्कार हैं ॥ १२ ॥ सब के कल्याणकारण भयनाशक दैत्यके नाशक कल्याणस्वरूप तेज

रसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।१२।
विष्णवे नमः ॥ नमः शंभवाय च मयोभवाय च ॥
नमःशंकराय च मयस्कराय च ॥ नमः शिवाय च
शिवतराय च ॥ शिवाय नमः॥ १३ ॥ श्रीश्चते लक्ष्मी
श्च पत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्या-त्तम्

करनेवारे कल्याणरूपधारी अतिशयकरके कल्याणकारी महादेवके अंतर्यामी जानके पूज
नमस्कार करैं ॥ १३ ॥ श्रीदेवी भूदेवी लीलादेवी ये आपकी पत्नी हैं ।दिनरात ये दोनू

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसवाड़े हैं नक्षत्र ये तुम्हारेही स्वरूप हैं अश्विनीकुमार तुमहीं करकें प्रकाशित हैं ये बैकुंठलोक अपने कृपाकटाक्षसें हमको देवो तैसे सब लोककों राज्य मोकों तुम देवो याकरकें लक्ष्मीके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणकों पूजा करैं लक्ष्मीजीके अर्थ नमस्कार है ॥ १४ ॥

इष्णन्निषाणामुंम इषाणासर्वलोकं म इषाण ॥ लक्ष्म्यै नमः ॥१४॥ अथ सत्यनारायणपूजाविधिः॥ व्रती संक्रांतौ पौर्णमास्यां चैकादश्यां यस्मिन्कस्मिन्दिने वा सायंकाले स्नानं कृत्वा ॥ पूजा

अब सत्यनारायणके पूजाके विधान लिखे हैं । व्रत करनेवारो जो पुरुष है सो संक्रांतिकों पूर्णमासीकों अथवा अमावास्याकों वा एकदशीकों चाहै जिस किसी दिनमें सायंकाल में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नान करके पूजाके स्थानमें आयकें आसनपर बैठकर आचमन कर पवित्री धारण करके गणेशके अंतर्यामी श्रीमन्नारायण गौरीके अंतर्यामी श्रीहरिवरुणांतर्यामी श्रीविष्णु इत्यादि

स्थानमागत्य आसन उपविश्याचम्य पवित्र-धारणं कृत्वा ॥ गणेशगौरीवरुणादेवतानां प्रतिष्ठावाहनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि अमुक-गोत्रोऽमुकशर्माहं सकलदुरितोपशमनसर्वापच्छांतिपूर्वकसकलमनोरथसिद्ध्यर्थं यथासंपादितसाम-

देवतानकी प्रतिष्ठा आवाहन करकै संकल्प करै आज या गोत्रको ये मेरो नाम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब पाप के नाश के लिये सब आपत्तिशांति पूर्वक सब मनोरथ सिद्धि के अर्थ जो सब सामग्री है ताकरकैं गणेश गौरी वरुणदेवता गणपति इत्यादि पंचलोकपालदेवता सूर्यादि नवग्रहदेवता इनकी पूजनपूर्वक पहिले बोल्यो भयो जो ये सत्यनारायणकों व्रत

अद्य गणेशगौरीवरुणादेवतागणपत्यादिपंचलोक-पालदेवता सूर्यादिनवग्रह देवता पूजन पूर्वकं पूर्वांगीकृतं श्रीसत्यनारायणपूजनं कथाश्रवणं च करिष्ये॥ गणेशादिभ्यो नमः॥ अर्घ्यपाद्याचमनी-

ताको पूजन कथाश्रवण हम करेंगे ऐसे संकल्प करै गणेशादिदेवताके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणकों नमस्कार है अर्घ्य पाद्य आचमन स्नान चंदन चावल पुष्प धूप दीप नैवेद्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचमनीय जल मुखको सुगंधिदायक तांबूल सुपारी सुवर्णमयी दक्षिणा इन सबकरकैं तिन तिनके मंत्रोसे समर्पण करै ऐसे सूर्यादिग्रहोंको तिनके जो मंत्र हैं तिनसे पूजन करैं ॥

यस्नान गंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनीयमुख-वासतांबूलपूगीफलद्रव्याणितत्तन्मंत्रैः समर्पयामि ॥ एवं सूर्यादिग्रहाणां तत्तन्मंत्रैः पूजनं कुर्यात् ॥ अथ सत्यनारायणपूजनप्रकारमाह ॥ पुष्पं गृहीत्वा ध्यानं कुर्यात् ॥ ध्यायेत्सत्यं गुणातीतं गुणत्रयस-

अब सत्यनाराणके पूजाको प्रकार वर्णन करैं हैं पुष्प हातमें लेकै ध्यान करैं, सत्यस्वरू

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प गुणोंसे अतीत तीनों गुणसहित लोकके स्वामी त्रिलोकीके स्वामी कौस्तुभमणि पहिने ऐसे श्रीहरिको ध्यान करै ॥ १ ॥ नील जिनको वर्ण है पीतांबर पहिरे हैं लक्ष्मीको और

मन्वितम् ॥ लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम् ॥१॥ नीलवर्णं पीतवस्त्रं श्रीवत्सपद भूषितम् गोविंदं गोकुलानंदं ब्रह्माद्यैरपि पूजितम् ॥ २ ॥ इति ध्यानम् ॥ व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय हृषीकपत

भृगुलताको जिनके वक्षस्थलमें चिन्ह है गोविन्द हैं गोकुलके आनंद देनेवारे हैं ब्रह्मा शिव इत्यादिकोंकूं पूजन करनेके योग्य हैं ॥२॥ ये ध्यान समाप्त भयो ॥ प्रगट अप्रगट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनको रूप इंद्रियोंके स्वामी तिनके अर्थ नमस्कार है मैंने भक्तिकरके आपको अर्घ दीनो है याको आप ग्रहण करो ॥ ३ ॥ ये अर्घ्य पूरो भयो । तुम्हारे अथ नमस्कार है

ये नमः ॥ मया निवेदितो भक्त्या अर्घोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ३ ॥ इत्यर्घम् ॥ नारायण नमस्तेस्तु नरकार्णवतारक ॥ पाद्यं गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय ॥ ४ ॥ इति पाद्यम् ॥ मंदाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ॥ तदिदं कल्पितंदेव

हे देवनके स्वामी ये पाद्य ग्रहण करो और मोकौं सुख बढाओ ॥ ४ ॥ ये पाद्य है। श्री-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगाजीको जो जल है वो सब पापको हरनेवारो है सो हे देव! आपके वार ते है यातें तुम सुंदर आचमन करो ॥ ५ ॥ ये आचमन है। हे देव! हे पुरुषोत्तम! हेअना थके नाथ!

सम्यगाचम्यतां त्वया ॥ ५ ॥ इत्याचमनम् ॥ स्नानं पंचामृतैर्देव गृहाण पुरुषोत्तम ॥ अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाणप्रणतिप्रिय ॥ ६ ॥ इति स्नानम् ॥

हे सर्वज्ञ! हे देवतानकी नमस्काररहीसैं प्रसन्न होवेवारे! हे भगवन्! या पंचामृतसें तुम स्नान करो ॥ ६ ॥ ये स्नान भयो। वेदकी सूक्तिसहित यज्ञ सामवेद याकरकें युक्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब वर्णाके देने वार ये मेरेदियो वस्त्र हैं इनको आप ग्रहण करो ॥ ७ ॥ ये वस्त्र देवे। ब्रह्मा विष्णु महादेव इनोंने जाको बनायो ऐसो जो योब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत याके दान

वेदसूक्तसमायुक्ते यज्ञसामसमन्विते ॥ सर्ववर्णप्रदे देव वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ ७ ॥ इति वस्त्रम् ॥

ब्रह्माविष्णुमहेशेन निर्मितंब्रह्मसूत्रकम् ॥ यज्ञोपवीतदानेन प्रीयतांकमलापतिः ॥ ८ ॥ इतियज्ञोपवीतम् ॥

श्रीखंडंचंदनंदिव्यंगंधाढ्यंसुमनोहरम् विलेपनंसुर

करनेसें श्रीलक्ष्मीपति प्रसन्न होवै ॥ ८ ॥ ये जनेऊको मंत्र है । सुंदर चंदन दिव्यसुगं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिसाहित सुंदर मनोहर चंदन है सो आप ग्रहण करो कैसे आप हो सुरोंमें श्रेष्ट हो ॥ ९ ॥
ये चंदनको मंत्र है । चमेलीइत्यादि सुगंधके पुष्प मालतीइत्यादिके फूल हे प्रभो ! मैं

श्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ९ ॥ इति चंदनम् ॥
मल्लिकादिसुगंधीनि मालत्यादीनिवै प्रभो ॥ मया
हृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ १० ॥
इति पुष्पाणि ॥ वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध

लाया पूजा के लिये पुष्पसो तुम ग्रहण करो ॥ १० ॥ ये पुष्पके चढानेको मंत्र है ।
अनेक वनस्पतियोंमेंसे उतपन्न अनेकवनस्पतियोंके रससें उतपन्न सुगंध जामें गंध सब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवतानके सूंघनेके योग्य ये धूप है सो आप ग्रहण करो ॥ ११ ॥ ये धूपको मंत्र है । घृत सहित वत्तीसहित अग्निसे जगायो भयो जो ये दीपक सो हे देवेश !या दीपकको आप

उत्तमः ॥आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ११ ॥इति धूपम् ॥साज्यं च वर्तिं संयुक्तं वन्हिना योजितं मया ॥ दीपं गृहाण देवेश त्रैलो-क्यतिमिरापह ॥ १२ ॥ इति दीपम् ॥घृतपक्वं ह-विष्यान्नं पायसं च सशर्करम् ॥ नानाविधं च नैवे-

ग्रहण करो त्रिलोकीके अंधेरेको नाश करनेवारे आप हो ॥१२ ॥ ये दीपकको घृतमें

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकायो ये मूंग भात खीर शक्कर जामें पडीहै और नानाप्रकार नैवेद्य हैं सो हे विष्णो ! आप ग्रहण करो ॥ १३ ॥ ये नैवेद्यको मंत्र है । सबके पापको हरनेवारो दिव्य निर्मल

द्यं विष्णो मे प्रतिगृह्यताम् ॥ १३ ॥ इति नैवेद्यम् ॥ सर्वपापहरं दिव्यं गांगेयं निर्मलं जलम् ॥ आच-मनं मया दत्तं गृह्यताम् पुरुषोत्तम ॥ १४ ॥ इत्या-चमनम् ॥ लवंग कर्पूरयुतं तांबूलं सुरपूजितम् ॥ प्री-

गंगाजीको जल है सो हे पुरुषोतम ! आचमनके लिये हम देवे हैं तुम ग्रहण करो । ये आचमनको मंत्र है ॥ १४ ॥ लौंग कर्पूर जामें देवताने जाको मानो ऐसो तांबूल प्रीति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करकै ग्रहण करो हे देवेश ! मोकों सुखको वढाओ। ये ताबूलको मंत्र है ॥ १५॥ हे देव ! ये फल मैंने तुह्मारे सामने धरे हैं ताकरके मोकों जन्मजन्ममें अनेक फलकी प्राप्ति होवे।

त्या गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्द्धय ॥ १५ ॥
इति तांबूलम् ॥ इदं फलं मया देवस्थापितं पुरतस्तव
तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ १६ ॥
इति फलम् ॥ चतुर्वर्तिसमायुक्तं घृतेन च सुपूरि-
तम् ॥ नीराजनेन संतुष्टो भवत्येवजगत्पतिः ॥ १७ ॥

ये फलको मंत्र है ॥ १६ ॥ चार जामें बत्ती घीसें भरी भई ऐसी आरतीसें जगतके पति संतुष्ट

२३,२८८
२२८
२२५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। ये आरतीको मंत्र है ॥ १७ ॥ जो कोई जन्मांतरके करे भए पाप हैं वे पाप सब आप की परिक्रमा करनेमें एक एक पांव धरनेमें नाश होते हैं या मंत्रसें प्रदक्षिणा करें ॥ १८॥

इति नीराजनम् ॥ यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि च ॥ तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणापदे पदे ॥ १८ ॥ इति प्रदक्षिणाम् ॥ ततः पुष्पांजलिं नमस्कारांश्च कृत्वा स्तुवीत ॥ यन्मया भक्तियुक्तेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं

ताके पाछे पुष्पांजलि नमस्कार करके स्तुति करे हे सत्यनारायण ! जो मैंने भक्तियुक्त होय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पत्र पुष्प फल जल आपको निवेदन कीने हैं सो आप कृपा करके ग्रहण करो ॥ १ ॥
जो मंत्रहीन है क्रियाहीन है भक्तिहीन है हे जनार्दन ! मैंने पूजा करी है सो सब संपूर्ण

तद्गृहाणानुकंपया ॥ १ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २॥ अमोघं पुंडरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम् ॥ हृषीकेशं जगन्नाथं वागीशं वरदायकम्

होवे ॥ २ ॥ महागंभीर कमलसरीखे जिनके नेत्र श्रीनृसिंहजी हिरण्यकश्यप दैत्यके मारनेवारे इंद्रियोंके स्वामी सब जगतके नाथ वाणीके स्वामी वरदायक ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ३ तीन गुणों को जाकों स्वरूप व तीनों गुणों से परे गौकी रक्षा क-रनेवारे गरूड जाकी ध्वजामें ऐसे जनार्दन मनुष्योंमें विलक्षण जानकीके पति दुःख हरने वारे ॥ ४ ॥ ऐसे पूर्वोक्त विशेषण जाके ऐसे श्रीमन्नारायणकों सदा भक्ति करकै हम प्रणाम

।३॥ गुणात्रयं गुणातीतं गोविंदं गरुडध्वजम् जनार्दन जनातीतं जानकीवल्लभं हरिम् ॥ ४ ॥ प्रणामामि सदा भक्त्या नारायणमतः परम् ॥ दुर्गमे विषमे घोरे शत्रुभिःपरिपीडिते ॥ ५ ॥ निस्तारयस्व सर्वेषु

करै हैं दुर्गममें विषममें घोर स्थानमें शत्रुओंसे पीडित जो मैं हूं सो मोकों ॥ ५ ॥ सब अनिष्ट भयोंके विषै आप निस्तारो उद्धार करो । ये नाम उच्चारण करैं तो मन-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वांछित फल प्राप्त होवे है ॥ ६ ॥ अनेक कामनाके दाता महाप्रभु कामनानके देनेवारे जो सत्यनारायण ताकों हम प्रणाम करें हैं जाकी लीला करकै विस्तृत है विश्व ऐसे देवता

तथानिष्टभयेषु च ॥ नामान्येतानि संकीर्त्य ईप्सितं फलमाप्नुयात् ॥ ६ ॥ सत्यनारायणं देवं वंदेहं कामदं प्रभुम् ॥ लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमो नमः ॥ ७ ॥ इति प्रार्थना ॥ अथ कथा ॥ व्यास उवाच ॥ एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः

को नमस्कार है ॥ ७ ॥ ये प्रार्थना भई ॥ श्रीसत्यदेवको नमस्कार है ॥ अब कथाका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारंभ करे हैं ॥ व्यास बोले, एक समय मननशील शौनकादिक सब ऋषि पुराणवक्ता सूतजीसें निश्चय करके पूंछते भये ॥ १ ॥ ऋषि पूंछे हैं व्रत करकें तप करकें क्या वांछित

शौनकादयः ॥ पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु ॥ १ ॥ ऋषय ऊचुः ॥ ॥ व्रतेन तपसा किंवा प्राप्यते वांछितं फलम् ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने ॥ २ ॥ सूत उवाच ॥ नारदेनैव संपृष्टो भगवान् कमलापतिः ॥ सुरर्षये यथैवाह

फल होता हैं सो हे महामुने! हम सब सुननेकी इच्छा करते हैं सो तुम कहो ॥ २ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूतजी बोले कि ॥ भगवान् कमलापतिसें नारदजीने पूंछे हैं सो नारदजीके अर्थ जैसे कहते भए सो तुम सावधान होय करके सुनो ॥ ३ ॥ मनुष्योंके ऊपर कृपा करनेके अर्थ

तच्छृणुध्वं समाहिताः ॥ ३ ॥ एकदा नारदो योगी परानुग्रहकांक्षया ॥ पर्यटन् विविधान् लोकान्मर्त्यलोकमुपागतः ॥ ४ ॥ ततो दृष्ट्वा जनान् सर्वान्नानाक्लेशसमन्वितान् ॥ नानायोनिसमुत्पन्ना

एक दिन नारद मुनि अनेक लोकोंमें फिरते फिरते मनुष्यलोकमें आए ॥ ४ ॥ तहाँ नाना प्रकारके क्लेशोंसें पीडित नाना प्रकारकी योनियोंमें जिनके जन्म अपने कर्मोंकरकै महा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःखी ऐसे मनुष्योंको देखते भए ॥ ५ ॥ बोले कि कौन उपाय करनेमें इन जीवोंको दुःख नाश होवै ऐसे मनमें विचार करके विष्णुलोकमें जाते भए ॥ ६ ॥ वा वैकुंठलोकमें शुक्ल

न्क्लिश्यमानान् स्वकर्मभिः ॥ ५ ॥ केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद्ध्रुवम् ॥ इति संचिंत्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा ॥ ६ । तत्र नारायणं देवं शुभ्रवर्णं चतुर्भुजम् ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमाला विभूषितम् ॥ ७ ॥ दृष्ट्वा तं देवदेवेशं स्तोतुं समुपचक्रमे

जिनको वर्ण सबमें व्यापक चार जिनके भुजा शंख चक्र गदा पद्म वनमाला या करकैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभित जो सबके स्वामी श्रीमन्नारायण हैं ॥ ७ ॥ तिन देवदेवको देखके स्तुति करते भए ॥ श्रीनारदजी बोले कि ॥ वाणी मनसे न जानो जावै जाको रूप ऐसे अनंतशक्ति धारी श्रीहरिको नमस्कार होय ॥ ८ ॥ आदि मध्य अंत तुममें नहीं हैं मायागुण तुममें नहीं

॥ नारदउवाच ॥ नमो वाङ्मनसातीतरूपायानंतशक्तये ॥८॥ आदिमध्यांतहीनाय निर्गुणाय महात्मने ॥ सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशिने ॥ ६ ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत ॥

हैं सब गुणोंके आत्मा हो सबके आदिकारण हो भक्तोंकी पीडाके नाशक हो याते नमस्कार होय ॥ ९ ॥ श्रीविष्णु ऐसी नारदजी की स्तुति सुनके नारदके प्रति बोले शोभायमान षड्गुण-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐश्वर्यवान् भगवान् बोले कि ॥ हे नारदजी! आप क्यों आये हो क्या आपके मनमें है॥१०॥ हे भागवत् तप्तशंखचक्रधारी ! तुम सब कहो तो पीछे हमभी कहते हैं श्रीनारदजी बोले

श्रीभगवानुवाच॥ किमर्थमागतोसि त्वं किं ते मनसि वर्त्तते।१०। कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामिते॥ नारद उवाच॥ मर्त्यलोके जनाः सर्वे नानाक्लेशसम न्विताः ॥ नानायोनिसमुत्पन्नाः पच्यंते पापकर्म ः ॥ ११ ॥ तत्कथं शमयेन्नाथ लघूपायेन

कि मनुष्यलोकमें सब जीव नाना प्रकारके क्लेशोंसे दुःखित हैं नाना योनियोंमें उत्पन्न हैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पापके कर्मोंकरके पक्क रहे हैं ॥ ११ ॥ सो हे नाथ! उनके पाप कैसे नाश होवें ऐसा कोई लघु उपाय कहो जो आप मोपर कृपालु हो तो ॥ १२ ॥ श्रीभगवान् बोले हे पुत्र!

तद्वद ॥ श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रहकांक्षया ॥ यत्कृत्वा मुच्यते मोहात्तच्छृणुष्व वदामि ते ॥ १३ ॥ व्रतमस्ति

लोकोंके अनुग्रहकी इच्छा करके तुमने बहुत सुंदर वार्ता पूंछी है जाके करेसे मोहसे दुःखसे मनुष्य छूट जावे है सो तुम सुनो हम तुमसे कहेत हैं ॥ १३ ॥ महापुण्यदाता एक

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रत हैं जो स्वर्गमें मनुष्यलोकमें महादुर्लभ है सो तुम्हारे स्नेहके मारे मैं अब सब कहता हूं ॥ १४ ॥ सत्यनारायणके वृतको सुंदर विधान करके वृत करै तो अत्यंत सुखको जल्दी

महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम् ॥ तव स्नेहान्मया वत्स प्रकाशःक्रियतेऽधुना॥१४॥सत्यनारायणस्यैवं व्रतं सम्यग्विधानतः ॥ कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्रे मोक्षमाप्नुयात् ॥ १५ ॥ तत् श्रुत्वा भगवद्वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत् ॥ नारद उवाच ॥

भोगके पाछै मोक्षको प्राप्त होवे हैं ॥ १५ ॥ ये श्रीभगवानूको वाक्य सुनके नारद मुनि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोले श्रीनारदजी कहतेहैं कि। का फलहै याको क्या विधानहै। और कौनने ये व्रत कीनोहै॥१६॥ सोसब आप विस्तारसें कहो कब ये व्रत करा जावैहै॥ तब श्रीभगवान् बोलेकि दुःख शोक

किं फलं किं विधानं च कृतं केनैव तद् व्रतम्॥ १६ ॥
तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं हि तद्व्रतम् ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ दुःखशोकादिशमनं धनधान्य
प्रवर्द्धनम् ॥१७॥ सौभाग्यसंततिकरं सर्वत्र विजय
प्रदम् ॥ यस्मिन् कस्मिन् दिने मर्त्यो भक्तिश्रद्धा-

इत्यादिको नाश करनेवारो है धनधान्यको बढानेवारो है ॥ १७ ॥ सौभाग्य देता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतान उतपन्न करे है सब जगह विजय करावे हैं जिस किसी दिनमें मनुष्य भक्ति श्रद्धामें युक्त होके ॥ १८ ॥ सायंकालमें सत्यनारायण जो देवता हैं तिनको पूजन करे ब्राह्मण

समन्वितः ॥ १८ ॥ सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे ॥ ब्राह्मणैर्बांधवैश्चैव सहितो धर्मतत्परः ॥ १९ ॥ नैवेद्यं भक्तितो दद्यात्सपादं भक्तिसंयुतम् । रंभाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम् ॥ २० ॥

भाई बंधु इन करके सहित धर्ममें तत्पर रहै ॥ १९ ॥ नैवेद्य भक्तिसें देवे उत्तम सवासेर को सुंदर मगद बनावे केलाके फल होवे घृत दूध गहूंको चून लावे ॥ २० ॥ जो गहूंको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चून हाजर न होवै तौ शालीको चून लेके शक्कर अथवा गुड़ मिलावे सवामण सवापांच सेर सवासेर करके इकट्ठा करें बांटैं ॥ २१ ॥ सब मनुष्योंको बुलायके कथा सुनें ब्राह्मणों

अभावे शालिचूर्णं वा शर्करां च गुडं तथा ॥
सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत् ॥ २१ ॥
विप्राय दक्षिणां दद्यात्कथां श्रुत्वा जनैः सह ॥
ततश्च बंधुभिः सार्धं विप्रांश्चप्रतिभोजयेत् ॥ २२ ॥
प्रसादं भक्षयेद्भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत् ॥

को दक्षिणा देवे पाछेभाई बंधु साहित ब्राह्मणों कोभोजन करावे ॥२२॥ प्रसाद आप पावे नृत्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीतादिक करावे पाछै सत्यनारायण को स्मरण करते करते अपने घरको चले जावे ॥ २३ ॥ ऐसे मनुष्य करेंगे तो उनकी मनकामना निश्चय करके पूरी होवेगी विशेष करके कलियुगमें पृथ्वीपर

ततश्च स्वगृहं गच्छेत्सत्यनारायणं स्मरन् ॥ २३ ॥ एवं कृते मनुष्याणां वांछासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ विशेषतः कलियुगे लघूपायोस्ति भूतले ॥ २४ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायण कथायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सूत उवाच ॥ अथान्यत्सं

लघुउपाय ये है ॥२४॥ इति श्रीस्कंदपुराणोक्त जो रेवाखंड तामें ये सत्यनारायणकी कथाको प्रथम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय संपूर्ण भयो ॥ १ ॥ सूतजी बोले कि अब हे शौनकादिक ऋषीश्वरो ! और हम वर्णन करते हैं जाने प्रथम व्रत कीनोहो वाको वृत्तांत कहते हैं अतिरमणीय काशीपुरमें अति निर्धन एक सतानंद नामक ब्राह्मण होतो भयो ॥ १ ॥ भूखप्याससे ब्याकुल होके

प्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विज ॥ कश्चित्काशीपुरे रम्ये ह्यासीद्विप्रोतिनिर्धनः ॥ १ ॥ क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले ॥ दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान्ब्राह्मणप्रियः ॥ २ ॥ वृद्धब्रा

नित्य पृथ्वी में घूमतो फिरे सो भगवान्को जो श्रीवैष्णव तप्तशंख चक्रांकित ब्राह्मण हैं ये बहुतही प्यारे हैं यासें ब्राह्मण को दुःखी देखके ॥ २॥ वृद्धब्राह्मण रूप बनके उस सतानंद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण से आदरमे पूछते भये हे विप्र! क्यौं तुम सब पृथ्वी पर नित्य दुःखी होके घूमते हो ॥ ३ ॥ सो सब हमारी सुनवेकी इच्छा है हे द्विजन में श्रेष्ठ! तुम हमसे कहो ॥ ब्राह्मण

ह्मणारूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात् ॥ किमर्थं भ्रमसे विप्र महीं नित्यं सुदुःखितः ॥ ३ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विजसत्तम ॥ ब्राह्मण उवाच ब्राह्मणोतिदरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम् ॥४॥ उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो ॥ वृद्ध

बोला ॥ में ब्राह्मण हूं अतिदरिद्री हूं भिक्षाके लिये पृथ्वी पै घूमता फिरता हूं ॥ ४ ॥ हे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभो ! जो कोई उपाय दरिद्र मिटने को तुम जानते हो तो कृपा करके कहो तब वे वृद्ध ब्राह्मण बोले कि सत्यनारायण जो विष्णु हैं सो मनवांछित फलदायक हैं ॥ ५ ॥ सो हे

ब्राह्मण उवाच ॥ सत्यनारायणो विष्णुर्वाँछितार्थ फलप्रदः ॥ ५ ॥ तस्य त्वं पूजनं विप्र कुरुष्व व्रत मुत्तमम् ॥ यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥ ६ ॥ विधानं च व्रतस्यापि विप्रायाभा

विप्र ! तिनको तू उत्तम व्रत कर पूजन कर जाके करेसे सब दुःखोंमे मनुष्य छुटजावे है ॥ ६ । बड़ी बिधि से या व्रत को विधान तिस ब्राह्मण को कहिके वे सत्यनारायण वृद्ध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणरूपधारी तबही अंतर्ध्यान हो गये ॥ ७ ॥ पश्चात् तिस सतानंदने बिचारो कि जो बृत ब्राह्मण ने कह्यो है वो हम करेंगे ऐसे विचार करके रात्रिको वाको निद्रा न आवती

ष्य यत्नतः॥ सत्यनारायणो वृद्धस्तत्रैवांतरधीयत ॥ ७ ॥ तद्व्रतं संकरिष्यामि यदुक्तं ब्राह्मणेनवै ॥ इति संचिंत्य विप्रोऽसौ रात्रौ निद्रां न लब्धवान् ॥ ८ ॥ ततः प्रातः समुत्थाय सत्यनारायणव्रतम् । करिष्य इति संकल्प्य भिक्षार्थमगमद्द्विजः॥ ९ ॥

भई ॥ ८ ॥ ता पाछे प्रातःकाल में उठके बोलो कि सत्यनारायण को बृत हम करेंगे ऐसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्प कर भिक्षाके निमित्त वो ब्राह्मण जातो भयो ॥ ९ ॥ उस दिन ब्राह्मण को बहुत धन प्राप्त भयो तिसी धन से भाई बंधु सहित सत्यनारायणको व्रत करतो भयो॥ १० ॥

तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान् ॥ तेनैव बंधुभिः सार्धं सत्यस्य व्रतमाचरत् ॥ १० ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसंपत्समन्वितः ॥ बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रभावतः ॥ ११ ॥ ततः प्रभृति

सब दुःखोंसे छूटके सब संपदा वाके होगई सब ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ श्रीवैष्णवतप्तशंखचक्रधारी ब्राह्मण होतो भयो याही व्रतके प्रभावसे ॥ ११ ॥ वाही दिनसे महीना महीनामें व्रत करतो भयो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे नारायणको यों व्रत कीनो ब्राह्मणोत्तम ने ॥ १२ ॥ सब पापसे छूट के दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होतो भयो हे ब्राह्मणो ! जब या व्रतको कोई भी पृथ्वीमें करैगो ॥ १३ ॥ तबही

कालं च मासि मासि व्रतं कृतम्॥ एवं नारायण स्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः ॥ १२ ॥ सर्व पाप विनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान् ॥ व्रत मस्य यदा विप्राः पृथिव्यां संकरिष्यति ॥१३ ॥ तदैव सर्वं दुःखं च मनुजस्य विनश्यति ॥ एवं

सब दुःख मनुष्यके विनाशको प्राप्त होवे हैं ऐसे महात्मा श्रीवैष्णव नारदजीसें श्रीमन्ना-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायणने कह्यो है ॥ १४ ॥ सोई हे ब्राह्मणो ! मैंने तुमसें कह्यो और कहता हूं तब ऋषि बोले कि हे मुने ! वो ब्राह्मणसे सुनके फेर ये व्रत पृथ्वीमें कौनने करो सो हमारे सुननेकी

नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने ॥ १४ ॥ मया तत्कथितं विप्राः किमन्यत्कथयामि वः ॥ ऋषय ऊचुः ॥ ॥ तस्माद्विप्रात् श्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धास्माकं प्रजायते ॥ १५ ॥ सूत उवाच ॥ शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं

इच्छा है ॥ १५ ॥ सूतजी बोले कि हे मुनियो ! जाने ये व्रत कीनो है पृथ्वीमें वाको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनो एक दिन वो ब्राह्मण जैसो वाको धन होनेसे विस्तार करके भाईबंधुसहित व्रत करतो भयो उसी कालमें कोई लकडी बेचनेवारो आवतो भयो ॥ १६ ॥ १७ ॥ लकडीको बोझो

येन कृतं भुवि ॥ एकदा स द्विजवरो यथाविभवविस्तरैः ॥ १६ ॥ बंधुभिः स्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः ॥ एतस्मिन्नंतरे काले काष्ठक्रेता समागमत् ॥ १७॥ बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ ॥ तृषाया पीडितात्मा च दृष्ट्वा विप्रं

बाहिर धरके ब्राह्मणके घरमें आवतो भयो प्यासो हो व्रत करे हुए ब्राह्मणको देखकर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

|| १८ || प्रणाम करके ब्राह्मणसैं बोल्यो कि ये तुम क्या करते हो हे प्रभो! याके करेसैं क्या फल मिलै है सो मोसैं कहो || १९ || वो ब्राह्मण बोलो कि || सबको मन वांछित

कृतव्रतम् || १८ || प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया || कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद्वद मे प्रभो||१९||विप्रउवाच || सत्यनारायणस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम्||तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यादिकं महत् || २० || तस्मादेतद्व्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेतातिह-

फल देनेवारो ये सत्यनारायणको व्रत है ताकी कृपासैं मेरे धनधान्यादिक ये सब हैं || २०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिनसें ये व्रत जानके लकड़ी बेचनेवारो बडो प्रसन्न भयो प्रसाद पायके जल पीतो भयो पाछे अपने घरमें चलो आयो ॥ २१ ॥ सत्यनारायण देवताको मनसे चिंतवन करतो भयो

पितः। पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ।२१। सत्यनारायणं देवं मनसा इत्यचिंतयत् ॥ काष्ठं विक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चाद्य यद्धनम् ॥ २२ ॥ तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम् ॥ इति संचिंत्य मनसा काष्ठं कृत्वा तु मस्तके ॥ २३ ॥

कि काष्ठ बेचनेमें जो गांवमेंसे धन मिलैगो ॥ २२ ॥ तिसी करके उत्तम सत्यनारायणको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये व्रत करेंगे ऐसे मनमें चिंतवन करके काष्ठको बोझो माथेपर रखकर ॥ २३ ॥ जहां धनीलोग रहते हैं वा नगरमें गयो वा दिन काष्ठके बेचनेसे द्विगुणो मोल वाको प्राप्त

जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः ॥ तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ ॥ २४ ॥ ततः प्रसन्नहृदयःसुपक्वं कदलीफलम् ॥ शर्कराघृत दुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम् ॥ २५ ॥ कृत्वैकत्र

होतो भयो ॥ २४ ॥ ताके पाछे वाको हृदय प्रसन्न भयो सो सुंदर पके भये केलाके फल चीनी घृत दुग्ध गहूंको चून ॥ २५ ॥ तिस सबको सवासेर करके अपने घर लेके चलो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयो पाछे भाई बंधुओंको बुलायके बडी विधिसे वृत करतो भयो ॥ २६ ॥ त्रिसी वृतके प्रताप करकैं धन पुत्र वाको हो गयो या लोकमें सुख भोगके अंतमें सत्यनारायण

सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ ॥ ततो बंधून्समाहूय चकार विधिना वृतम् ॥ २६ ॥ तद्व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रान्वितोऽभवत् ॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं ययौ २७ इति श्रीस्कं० रे० स० द्वि० ॥ २ ॥

के लोकको प्राप्त होतो भयो ॥ २७ ॥ इति श्रीस्कंद पुराणोक्त रेवाखंडे भाषा वृन्दावनवासि नारायण शास्त्रिविरचितसत्यनारायणकथायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल समान जाको मुख ऐसी प्रमुग्धा स्त्री थी वे दोनों भद्रशीला नदी के किनारे पर सत्यनारायण को व्रत करते भए ॥३॥ याही अंतर में साधु जाको नाम ऐसो वैश्य आवतो

भद्रशीलानदीतीरे सत्यस्य व्रतमाचरत् ॥ ३ ॥
एतस्मिन्नंतरे तत्र साधुरेकः समागतः ॥ वाणिज्यार्थं
बहुधनैरनेकैः परिपूरितः ॥ ४ ॥ नावं संस्थाप्य
तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति ॥ दृष्ट्वास व्रतिनं भूपं
पप्रच्छ विनयान्वितः ॥ ५ ॥ साधुरुवाच ॥

भयो व्यापार के लिये बहुत धन करके पूरित हो ॥ ४ ॥ वहां तीर पर नाव खड़ी करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूतजी बोले कि हे मुनियोंमें श्रेष्ठहो ! फेर आगे कहते हैं कि पहिले एक उल्कामुख नाम करके या पृथ्वीको राजा होतो भयो ॥ १ ॥ जितेंद्रिय सत्य बोले राजा देवालयों में जावे

॥ सूत उवाच ॥ पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमाः ॥ पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चासीन्महीपतिः ॥ १ ॥ जितेंद्रियः सत्यवादी ययौ देवालयं प्रति ॥ दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान्संतोषयत्सुधीः ॥ २ ॥ भार्या तस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती ॥

नित्यप्रति धन दे दे के वो सुंदरबुद्धिवारो ब्राह्मणों को प्रसन्न करतो भयो ॥२॥ तिसकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजाके पास आयो उस राजाको व्रती देखके विनती करके पूछतो भयो ॥ ५ ॥ साधु बनियां बोले कि हे राजन् ! भक्तिसहित चित्त करके ये कहा करते हो ये सब हमको कहो

किमिदं कुरुषे राजन्भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम् ॥ ६ ॥ राजोवाच ॥ पूजनं क्रियते साधो विष्णोरतुलतेजसः ॥ व्रतं च स्वजनैः सार्धं पुत्राद्यावाप्तिकाम्यया ॥ ७ ॥

या समय हमारी सुनवे की इच्छा है ॥ ६ ॥ राजा बोले कि हे साधु वैश्य ! अतुल जिनमें तेज ऐसे सत्यनारायण की पूजन करें हैं भाई बंधु सहित पुत्र की चाहना के वास्ते ऐसे जानों ॥७॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा को बचन सुन करके साधु बनियां बड़े बड़े आदरसें बोले हे राजन्! ये सच तुम हमसे कहो जो तुम कहोगे सो हम सब करेंगे ॥ ८॥ मेरेभी तो संतान नहीं या वृतसें निश्चय है

भूपस्य वचनं श्रुत्वासाधुः प्रोवाच सादरम् ॥ सर्वं कथय मे राजन्करिष्येऽहं तवोदितम् ॥ ८ ॥ ममापि संततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम् ॥ ततो निवृत्य वाणिज्यात्सानंदो गृहमागतः ॥ ९ ॥ भार्यायै कथितं सर्वं व्रतं संततिदायकम् ॥ तदा व्रतं

कि संतान मेरे होवैगो तब पाछे व्यौपार से लौटके महा आनंदित घरमें आवतो भयो ॥ ९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वो संतान देनेवारो वृत करूंगो अपनी स्त्री सें कहतो भयो बोलो कि यह वृत मैं तब करूंगो जब मोरे संतान होवेगो तब पहिले नहीं करूंगो ॥ १० ॥ ऐसे वो साधु लीलावती अपनी भार्या

करिष्यामि यदा मे संततिर्भवेत् ॥ १० ॥ इति लीलावतीं प्राह पत्नीं साधुः स सत्तमः ॥ एकस्मिन्दिवसे तस्यभार्या लीलावती सती ॥ ११ ॥ भर्तृयुक्तानंदचित्ताऽभवद्धर्मपरायणा ॥ गर्भिणी साऽभवत्तस्य भार्या सत्यप्रसादतः ॥ १२ ॥ दशमे

सों कहिके चुप होतो भयो महापतिवृता वाकी लीलावती भार्या एक दिन ॥११॥ पति सहित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंदित संसारियों की नाईं सत्यनारायण की कृपा सें गर्भवती होती भई ॥ १२ ॥ दशवें महीनेमें वाके कन्यारूप रत्न उत्पन्न होतो भयो जैसे शुक्ल पक्षको चंद्रमा बढै ऐसे दिन दिन वो

मासि वै तस्याः कन्यारत्नमजायत ॥ दिने दिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी ॥ १३ ॥ नाम्ना कलावती चेति तन्नामकरणं कृतम् ॥ ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः ॥ १४ ॥ नकरोषि किमर्थं वै पुरा संकल्पितं व्रतम् ॥ साधुरुवाच ॥

बढती भई ॥ १३ ॥ वाको कलावती ये नामकरण कीनो एक दिन लीलावती वाकी स्त्री

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी सें मधुर वचन बोली ॥ १४ ॥ पहिले संकल्प कियो भयो जो वृत है सो क्यों नहीं कीनो साधु वैश्य बोल्यो कि हे प्यारी या व्रत को या कन्याके

विवाहसमयेतस्याः करिष्यामि व्रतं प्रिये ॥ १५ ॥
इतिभार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति ॥ ततः
कलावती कन्या ववृधे पितृवेश्मनि ॥ १६ ॥ दृष्ट्वा
कन्यां ततःसाधुर्नगरे सखिभिःसह ॥ मंत्रयित्वा द्रुतं

व्याहके समयमें करेंगे ॥ १५ ॥ ऐसे अपनी स्त्रीसे कहिके अपने और नगरोंके प्रति जातो भयो पाछे वो कलावती कन्या पिताके घरमें बढती भई ॥ १६ ॥ वा साधुने कन्याको सखि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योंके साथ देखी तब सलाह करके बहुत शीघ्र धर्मात्मा वो वैश्य दूतको भेजतो भयो ॥१७॥ या कन्याके ब्याहके निमित्त श्रेष्ठ वर विचारके लाओ बाकी आज्ञा पायके वो दूत कांचन

दूतंप्रेषयामास धर्मवित्॥ १७॥ विवाहार्थे च कन्याया वरं श्रेष्ठं विचारय॥ तेनाज्ञप्तश्च दूतोऽसौ कांचनं नगरं ययौ॥ १८॥ तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायागतो हि सः॥ दृष्ट्वा तु सुंदरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम्॥ १९॥ ज्ञातिभिर्बंधुभिः सार्धं परितुष्टेन चेतसा॥

नाम नगरमें जातो भयो ॥ १८ ॥ तहांसे एक वाणियांके पुत्रकों लेके वहां आयो बड़े

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जामें गुण सुंदर ऐसे बालक वा वैश्यके पुत्रको देखके ॥ १९ ॥ बडो प्रसन्न होके जातके भाईबंधुनको इकट्ठा करके वा साधु वैश्य के पुत्रको बड़ी विधिविधानसे कन्या देतो

दत्तवान्साधुपुत्राय कन्यां विधिविधानतः ॥ २० ॥ ततो भाग्यवशात्तेन विस्मृतं व्रतमुत्तमम् ॥ विवाह-समये तस्यास्तेन रुष्टोऽभवत्प्रभुः ॥ २१ ॥ ततः कालेन नियतो निजकर्मविशारदः ॥ वाणिज्यार्थं

भयो ॥ २० ॥ ता पाछे भाग्यके वशते वो सत्यनारायणको व्रत फेर भूल गयो वाके व्याहके समयमें सत्यनारायण रुठाए ॥ २१ ॥ तब कुछेक दिनमें थोड़े कालमें निज काममें वो चतुर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मीवान् वैश्यपुत्र जंवाईको लेके व्यापार करनेको चल्यो जातो भयो ॥२२॥ समुद्र के किनारे से रत्नसार पुरमें जायके लक्ष्मीवान् जंवाईकरके सहित वाणिजकर्म करतो भयो ॥ २३ ॥ वे दोनों

ततःशीघ्रं जामातृसहितो वणिक् ॥ २२ ॥ रत्नसार पुरे रम्ये गत्वा सिंधुसमीपतः ॥ वाणिज्यमकरोत्साधुर्जामात्रा श्रीमता सह॥ २३ ॥ तौ गतौ नगरे रम्ये चंद्रकेतोर्नृपस्य च ॥ एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः ॥२४॥ भ्रष्टप्रतिज्ञामालोक्य शापं

चंद्रकेतु राजाके नगरमें गये वाही कालमें सत्यनारायण प्रभु २४॥ वाकी भ्रष्टप्रतिज्ञा देखके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याको शाप देते भये बोले कि महादारुण कठिन दुःख याको होवेगो ॥ २५ ॥ एक दिन राजाके धनको लेके चौर वहां आयो जहां ये धनवान् बणियें बैठे थे ॥ २६ ॥ ताके पाछे भागे चले आवें

तस्मै प्रदत्तवान् ॥ दारुणं कठिनं चास्य महद्दुःखं भविष्यति ॥ २५ ॥ एकस्मिन्दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः ॥ तत्रैव चागतश्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ ॥२६॥ तत्पश्चाद्धावकान्दूतान्दृष्ट्वा भीतेन चेतसा ॥ धनं संस्थाप्य तत्रैव सतु शीघ्रमलक्षितः ॥

ऐसे दूतोंको देखके भयसे डरे भये चित्तकरके धन वहां नावमें राखके झटपट भाग गयो ॥२७॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता पाछे वे राजाके सिपाई वहां आये जहां वे वैश्य बैठेथे वहां राजाको धन देखके उन दोनों वैश्योंको बांधलीनो और राजद्वारको आए॥२८॥बडी प्रसन्नतासें भागे आये राजाके समीपआ-

॥ २७ ॥ ततो दूताः समायाता यत्रास्ते सज्जनो वणिक् ॥ दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्वानीतौ वणिक्सुतौ ॥ २८ ॥ हर्षेण धावमानाश्च ऊचुर्नृपसमीपतः॥ तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याज्ञापय प्रभो ॥ २९ ॥ राज्ञाज्ञप्तास्ततःशीघ्रं दृढं बद्ध्वा तु तावुभौ॥

यके बोले कि दो चोर पकड़के हम लायेहैं प्रभो ! वे तुम देखक आज्ञा करो॥२९ राजाकी आज्ञा सें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्र तिनको बांधके खूब दोनोंको महाभारी जेलखानेमें कैद करते भये या बातको विचारभी न करते भए ॥ ३० ॥ सत्यनारायणकी मायासें उनके बचनको किसीनेभी नहीं

स्थापितौ द्वौ महादुर्गे कारागारेऽविचारतः ॥३०॥ मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः ॥ अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चंद्रकेतुना ॥ ३१ ॥ तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या चैवातिदुःखिता ॥ चौरेणापहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम् ॥३२॥ आधिव्याधि

सुनों यह सत्यनारायणकी मायाहै या कारणतें उनको धनसब चंद्रकेतु राजाने छीनलीनो ॥३१॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता! शापसे विनके घरमें स्त्रियेंभी अतिदुःखित भईं जो कुछधन घरमें सो सब चौर चुरायके लेगए॥३२॥ शरीरमेंपीडा मनमें चिंता भूखी प्यासी अति दुःखित अन्नकी चिंताकरतीभईं॥३३॥

समायुक्ता क्षुत्पिपासातिदुःखिता॥ अन्नचिंतापरा भूत्वा बभ्राम च गृहे गृहे॥ कलावती तु कन्यापि बभ्राम प्रतिवासरम् ॥३३॥ एकस्मिन् दिवसे जाता क्षुधार्ता द्विजमंदिरम् ॥ गत्वापश्यद्व्रतं तत्र सत्यनारायणस्य च ॥ ३४ ॥ उपविश्य कथां श्रुत्वा

एक दिन कलावती कन्या महाभूखी किसी ब्राह्मणके मंदिरमें गई वहां जायके सत्यनारायण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को व्रत देखती भई ॥३४॥ वहां बैठके कथा सुनिके प्रार्थना करती भई प्रसादपायो पाछे रात्रिको घरमें आवती भई ॥ ३५ ॥ प्रेमसें माता कलावती कन्यासें कहती भई कि हे पुत्रि !

वरं प्रार्थितवत्यपि ॥ प्रसादभक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति ॥ ३५ ॥ माता कलावतीं कन्यां कथयामास प्रेमतः॥ पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते॥ ३६ ॥ कन्याकलावती प्राह मातरं प्रति सत्वरम्॥ द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वांछितसिद्धि

रात्रि में कहां रही क्या तेरे मनमें है ॥३६॥ यह सुन वो कलावती कन्या मातासेंशीघ्र बोली हे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता ! ब्राह्मणोंके मंदिरमें सब मनकी कामनाको पूरन करनेवारो वृत मैंने देखो हो और वहांही रही ॥ ३७ ॥ ऐसे कन्याको वाक्य सुनके वृत करनेकी इच्छा करती भई सो वो प्रसन्न

दम् ॥३७॥ तत् श्रुत्वा कन्यकावाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता ॥ सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च ॥ ३८ ॥ वृतं चक्रे सैव साध्वी बंधुभिः स्वजनैः सह ॥ भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां

होके वणियांकी स्त्री सत्यनारायणके व्रतकी इच्छा करती भई ॥३८॥सो वो साधुकी साध्वी स्त्री भाईबंधुओंके साथ वृत करती भई और ये बोली कि मेरो पति मेरो जंवाई ये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो सब दे देओ और जो न देओगे तो राज धन पुत्र सहित तोकों हम नाश कर देवेंगे॥४२॥ ऐसे पुकार के कहिके वो सत्यनारायणकी आकाशवाणी चुप होगई तापाछे प्रातःकाल में

धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत्त्वयाधुना ॥ नोचेत्त्वांनाशयिष्यामि सराज्यधनपुत्रकम्।४२।एवमाभाष्य राजानं ध्यानगम्यो भवत्प्रभुः । ततःप्रभातसमयेराजा च स्वजनैःसह।४३।उपविश्य सभामध्येप्राहस्वप्नंजनंप्रति। बद्धौ महाजनौ शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ ।४४।

अपने स्वजनोंके साथ वो राजा ॥ ४३ ॥ सभामें बैठके अपने स्वप्नेको हाल मनुष्योंको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों अपने घरको आवे ॥ ३९ ॥ मेरे पतिको और जंवाईको अपराध हे सत्यनारायण ! तुम क्षमा करनेको योग्य हो ऐसे सुन या व्रतकरके सत्यनारायण प्रभु प्रसन्न होतेभए॥ ४०॥

स्वमाश्रमम् ॥ ३९ ॥ अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षंतुमर्हसि ॥ व्रतेनानेन तुष्टोसौ सत्यनारायणः पुनः ॥ ४० ॥ दर्शयामास स्वप्नं हि चंद्रकेतुं नृपोत्तमम् ॥ बंदिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम ।४१। देयं

और राजानमें उत्तम जो चंद्रकेतु नृपती ताको स्वप्न दिखाते भए बोले कि हे नृपोंमें श्रेष्ठ राजन् ! ये दोनों जो कदी वैश्य हैं इनको छोड़ देओ ॥ ४१ ॥ जो तुमने इनको धन लीनो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भए ॥ ४६ ॥ भयसे बिव्हल पहिलो जो वृत्तांत है सो न कहिते भए राजा राजा विन
बाणियानको देख के बडे आदर से बचन बोलो ॥ ४७ ॥ कोई तुम्हारे प्रारब्धसे ये दुःख

स्मरंतौ पूर्वबृत्तान्तं नो चतुर्भयविह्वलौ ॥ राजा
वणिक्सुतौवीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम् ॥ ४७ ॥
दैवात्प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वैभयम्॥तदा
निगडसंत्यागं क्षौरकर्माप्यकारयत् ॥ ४८ ॥वस्त्रा
लंकारकंदत्त्वा परितोष्य नृपश्च तौ ॥ पुरस्कृत्य

तुमको प्राप्त भयो है अब कुछ भय नहीं हैं तब राजाने बेड़ी कटवाइ क्षौर करवाया॥४८॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहतो भयो बंधे भये वे जो दोनों महाजन हैं उनको जल्दी छोड देओ ॥ ४४ ॥ ऐसे राजा के बचन सुनतेही उन दोनों वैश्यों को छोड देते भए वे सब चाकर राजाके सामने

इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ ॥
समानीय नृपस्याग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः ॥४५॥
आनीतौ द्वौ वणिकपुत्रौ मुक्तौ निगडबंधनात् ॥
ततो महाजनौ नत्वा चंद्रकेतुं नृपोत्तमम्॥ ४६ ॥

लायके बडी बिनती करके बोले ॥ ४५ ॥ वे दोनों वैश्यों को लाए हैं जो बेडी के वंधन से छूटे हैं तब उन वैश्यों ने राजान में उत्तम जो वो हैं चंद्रकेतु ताही नमस्कार करते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घरकों जाते भए ॥ ५१ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायणकथायां श्रीवृंदा बननिवासी शास्त्रिनारायणदास विरचितायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ सूतजी बोले कि सुंदर

महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति ॥ ५१ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायण व्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः ॥३॥ सूत उवाच ॥ यात्रां तु कृतवान् साधुर्मंगलायनपूर्विकाम् ॥ ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरं ययौ ॥ १ ॥ कियद्दूरे गते साधौ

मंगलायनपूर्वक यात्रा साधु करतो भयो ब्राह्मणोंको धन देके नगरको जातो भयो ॥ १ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्र गहिने देकै उन दोनोंको प्रसन्न करके आगे करके वाणीसे अत्यंत संतोष करावतो भयो ॥ ४९ ॥ पहिले जो इनके द्रव्य छीन लीनो हो सो दूनोकर के देते भए और राजा

वणिक्पुत्रौ वचसातोषयद्भृशम् ॥ ४९ ॥ पुरानीतंतु यद्द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान् ॥ प्रोवाच तौ ततो राजा गच्छ साधो निजाश्रमम् ॥ ५० ॥ राजानं प्रणिपत्याह गंतव्यं त्वत्प्रसादतः ॥ इत्युक्त्वा तौ

बोला कि हे साधो ! तुम अपने निज घरको जाओ ॥ ५० ॥ विनाने राजा को प्रणाम कीनो और बोले कि आपकी कृपासे हम जावेगें ऐसे कहिकर के वे महाभारी बणिये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब वो साधु वैश्य कुछेक दूर गयो तब सत्यनारायण प्रभु वाके मनकी बात जानेवकी इच्छा करके बोले हे साधो ! तेरी नाव में क्या है ॥ २ ॥ तब वे महाजन महामदांध उन

सत्यनारायणः प्रभुः॥ जिज्ञासां कृतवान् साधो किमस्ति तव नौस्थितम् ॥ २ ॥ ततो महाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै ॥ कथं पृच्छसि भो दंडिन् मुद्रां नेतुं किमिच्छसि ॥ ३ ॥ लतापत्रादिकं चैव वर्तते तरणौ मम ॥ निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा

को अनादर करके हंसकै बोले हे दंडिन् ! कहा पूंछते क्या कुछ रूपया लेनेकी इच्छा है। ३॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु मेरी नाव में तौ लतापत्ता इत्यादिक हैं ऐसो निष्ठुर बचन सुनके सत्यनारायण बोले कि तेरो बचन सत्य होवे जो तू कहे सोई होवै ॥ ४ ॥ ऐसे कहिके शीघ्र वो दंडी

सत्यं भवतु ते वचः ॥ ४ ॥ एवमुक्त्वा गत शीघ्रं दंडी तस्य समीपतः ॥ कियद्दूरे ततो गत्वा स्थितः सिंधुसमीपतः ॥ ५ ॥ गते दंडिनि साधुश्च कृतनित्यक्रियस्तदा ॥ उत्थितां तरणीं दृष्ट्वा विस्मयं परमं

ताके पाससे लौट आय कुछ थोडीसी दूर जाय के समुद्र के किनारे पर बैठ गए ॥ ५ ॥ जब वो दंडी चलो गयो तब वो साधु नित्यक्रिया करकै अपनी नावके बहुत हलकी उठी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई चलती देखके बड़ो विस्मयको प्राप्त भयो ॥६॥ और वा नाव में लतापत्रादिक देखके मूर्छा खायके भूमिमें गिरपड़ो थोड़ी देर में सावधान भयो तो महाचिंता भई ॥७॥ तब वाकी

ययौ॥६॥दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितोन्यपतद्भुवि॥
लब्धसंज्ञो वणिक्पुत्रस्ततश्चिंतान्वितोऽभवत् ॥
॥ ७ ॥ तदा तु दुहितुः कांतो वचनं चेदमब्रवीत् ॥
किमर्थं क्रियतेशोकः शापो दत्तश्च दंडिना ॥ ८ ॥
शक्यतेऽनेन सर्वं हि कर्तुं चात्र न संशयः ॥ अतस्त

बेटीको मालक जवांई ये बचन बोलो कि क्यों शोक करो हो ये तो वा दंडीने शाप दीनों है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥८॥ ये दंडी सब कुछ करने को समर्थ है याते वाकी शरण चलोगे तो तुम्हारे मन वांछित फल पूरो होगो ॥९॥ ऐसे जवांई को बचन सुनके वाके पास गयो वो दंडी को देख नमस्कार

च्छरणं यामो वांछितार्थो भविष्यति ॥९॥ जामातुर्वचनं श्रुत्वातत्सकाशं गतस्तदा ॥ दृष्ट्वा च दंडिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम् ॥ १० ॥ क्षमस्व चापराधं मे यदुक्तं तव सन्निधौ ॥ एवं पुनः पुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत् ॥ ११ ॥ प्रोवाच

कर बड़े आदरसे बोलो ॥ १० ॥ हे स्वामिन् ! मेरे अपराध को क्षमा करो जो मैंने तुम्हारे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने कह्यो हो ऐसे बारंबार नमस्कार करके महाशोक से व्याकुल भयो ॥ ११ ॥ वा वैश्य को विलाप करतो देख के वो दंडी बोले मत रोवे मूर्ख मेरो बचन सुन मेरी पूजन से त बहिर्मुख है ॥ १२ ॥ हे दुष्टबुद्धिवारे ! मेरी अवज्ञा कीनी याते बारंबार

वचनं दंडी विलपंतं विलोक्य च ॥ मारोदीः शृणु मद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः ॥ १२ ॥ ममाज्ञया च दुर्बुद्धे लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः ॥ तत् श्रुत्वा भगवद्वाक्यं स्तुतिं कर्तुं समुद्यतः॥ १३ ॥ साधुरुवाच ॥

तोकों दुःख प्राप्त भयो ऐसे भगवान् के वाक्य सुनके स्तुति करने लगो ॥ १३ ॥ साधु वैश्य बोलो कि हे प्रभो ! तुम्हारी माया करके ब्रह्मादिक देवता सब मोह को प्राप्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं तुम्हारे आश्चर्य के करनेवारे या रूप और सौशील्यादि गुणको नहीं जानते हैं ॥१४॥ मैं तो मूढ हूं भला तुम्हें कैसे जानूं मैं तुम्हारी मायासे मोहित हो रह्यो अब तुम प्रसन्न होवो

त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः ॥ न जानंतिगुणान् रूपं तवाश्चर्यमिदं प्रभो ॥ १४ ॥ मूढोहं त्वां कथं जाने मोहितस्तव मायया ॥ प्रसीद पूजयिष्यामि यथाविभवविस्तरैः ॥ १५ ॥ पुरावित्तं च तत्सर्वं त्राहि मां शरणागतम् ॥ श्रुत्वा भक्ति

और जैसो मेरो पहिले धन वैभवको विस्तार हो तैसो करो मैं पुजा करूंगो ॥ १५ ॥ पहिलो जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरो सब धनहो सो वैसेही करो मैं तुम्हारे शरण आयोहूं मेरी रक्षा करो ऐसो भक्तिको वाक्य सुन करकें जनार्दन बहुत प्रसन्न भए। १६। वाको मनवांछित वर देकै श्रीविष्णु तहांही अंतर्धान होगए

युतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः ॥ १६ ॥ वरं च वांछितं दत्त्वा तत्रैवांतर्दधे हरिः ॥ ततो नावं समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम् ॥ १७ ॥ कृपया सत्यदेवस्य सफलं वांछितं मम ॥ इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधिः ॥ १८ ॥ हर्षेण चाभ

तापाछे वो नावपर सवार भयो भरीपूरी नाव देखी॥१७॥सत्यनारायणकी कृपासे सब मेरो वांछित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल भयो ऐसे कहिके स्वजनसहित यथाविधिसे पूजा करतो भयो ॥ १८ ॥ बड़ो हर्ष से पूर्ण भयो सत्यनारायणकी कृपासे नावको बड़े यत्न से चलने के योग्य करके अपने देशको जातो भयो ॥

त्पपूर्णः सत्यदेवप्रसादतः ॥ नावं संयोज्य यत्नेन स्वदेशागमनं कृतम् ॥ १९ ॥ साधुर्जामातरं प्राह पश्य रत्नपुरीं मम ॥ दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम् ॥ २० ॥ दूतोसौ नगरं गत्वा साधु

॥१९॥ वो वैश्य साधु अपने जंवाई से बोलो कि हे प्रिय ! मेरी रत्नसार पुरी को तुम देखो और अपने निज धनकी रक्षा करनेवारे दूत को भेजतो भयो ॥२०॥ वो दूत नगर में जायके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु की स्त्री को देख के हाथ जोड़ के वा समय में वांछित वाक्य बोलो ॥ २१ ॥ या नगर के निकट जंवाई सहित लक्ष्मीवान् वैश्य बहुत भाई बंधु सहित बहुत धन सहित

भार्यां विलोक्य च ॥ प्रोवाच वांछितं वाक्यं नत्वा बद्धांजलिस्तदा ॥ २१ ॥ निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक् ॥ आगतो बंधुवर्गैश्च वित्तैश्च बहुभिर्युतः ॥ २२ ॥ श्रुत्वा दूतमुखाद्वाक्यं महाहर्षवती सती ॥ सत्यपूजां ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति ॥ २३ ॥

आए हैं ॥ २२ ॥ ऐसे दूत के मुखसे बचन सुनके महाहर्ष भयो सत्यनारायणकी पूजा करके अपनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्रीतैं बोली ॥२३॥ तू जल्दी आव मैं साधु के देखनेको जाऊं हूं ऐसे माता के बचनको सुनके व्रतको समाप्त करके ॥२४॥ सत्यनारायणको महाप्रसाद छोड़के वा कन्या पतिके पास आवती

व्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसंदर्शनाय च ॥ इति
मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च ॥ २४ ॥
प्रसादं च परित्यज्य गता सापि पतिं प्रति ॥
तेन रुष्टः सत्यदेवो भर्तारं तरणीं तथा ॥ २५ ॥
संहृत्य च धनैः सार्द्धं जले तस्यावमज्जयत् ॥ ततः

भई ताकरके रुष्ट भए सत्यदेव सो वाके पतिको और नाव को ॥२५॥ सब धन सहित नावको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलमें डुबवाय देते भये तब वा कलावती कन्याने अपनों पति न देखो॥ २६॥ महाशोककरके तहां रोयवे लगी धरनी में गिर पड़ी वा नाव को डूबती देखके वा कन्याको बहुत दुःखी देखी॥

कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम् ॥ २६॥ शोकेन महता तत्र रुदती चापतद्भुवि ॥ दृष्ट्वा तथा विधां नावं कन्यां च बहुदुःखिताम् ॥ २७॥ भीतेन मनसा साधुःकिमाश्चर्यमिदं भवेत् ॥ चिन्त्यमानाश्च ते सर्वे बभूवुस्तारिवाहकाः ॥ २८॥

॥२७॥ बड़ो भय जाके मनमें साधु बोलो कि ये कहा आश्चर्य भयो वे सब नाव के चलाने-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारेभी महाचिंता करने लगे॥ २८ ॥ तब वो लीलावती कन्याको देखके बड़ी भयभीत भई अतिदुःखसें विलाप करने लगी अपने भर्तासे ये बोली ॥ २९ ॥ यासमय नावसहित वो जवांई

ततो लीलावती कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाभवत् ॥
विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत् ॥ २९ ॥
इदानीं नौकया सार्द्धं कथं सोऽभूदलक्षितः ॥ न
जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता ॥ ३० ॥
सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वा केन शक्यते ॥ इत्यु-

कैसे अलक्षित हो गयो न जाने कौन देवताको अपराध बन पड़ो है ताने वाको हर लीनो ॥३०॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यनारायणको माहात्म्य कौन जाननेको समर्थ है ऐसे कहिके अपने बंधुसहित विलाप करती भई ॥ ३१ ॥ महाखेद करकै लीलावती बेटी को गोदी में लेके रोयवे लगी तब वो कलावती

का विललापैव ततश्च स्वजनैः सह ॥ ३१ ॥ ततो लीलावती कन्यां क्रोडे कृत्वा रुरोद ह ॥ ततः कलावती कन्या नष्टे स्वामिनि दुःखिता ॥ ३२ ॥ गृहीत्वा पादुकां तस्यानुगंतुं च मनो दधे ॥ कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनो वणिक् ॥ ३३ ॥

कन्या स्वामी के नष्ट होने से दुःखित भई ॥३२॥ वाकी खड़ाऊ लेके वाके पाछे मरनेकी इच्छा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती भई कन्या को चरित्र देखके स्त्रीसहित वो बणियां सज्जन ॥ ३३ ॥ अतिशोक में व्याकुल होके चिंता करने लगो वो सज्जन वैश्य धर्मवेत्ता बोलो कि ये सब सत्यनारायणने

अतिशोकेन संतप्तश्चिंतयामास धर्मवित् ॥ हृतं वा सत्यदेवेन भ्रांतोऽहं सत्यमायया ॥ ३४ ॥ सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभवविस्तरैः ॥ इति सर्वान्समाहूय कथयित्वा मनोरथम् ॥ ३५ ॥

हर लीनो वा सत्यनारायणकी माया ने कुछ कीनो ॥३४॥ सत्यनारायणकी पूजा करूंगो जैसो वैभवको विस्तार होगो तैसो ऐसे सब को बुलायके अपनो मनोरथ कहितो भयो ॥ ३५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारंबार सत्यदेवको नमस्कार करिके गरीबोंकी रक्षा करनेवारे श्रीसत्यदेव प्रसन्न हो गए ॥ ३६ ॥ भक्तवत्सल कृपा करके ये बचन बोले कि हमारे प्रसादको त्यागकरके तेरी क-

नत्वा च दण्डवद्भूमौ सत्यदेवं पुनःपुनः ॥ तत-स्तुष्टःसत्यदेवो दीनानां परिपालकः ॥ ३६ ॥ जगाद बचनं चैनं कृपया भक्तवत्सलः ॥ त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्या पतिं द्रष्टुं समागता ॥ ३७ ॥ अतोऽदृष्टो-ऽभवत्तस्याः कन्यकायाः पतिर्ध्रुवम् ॥ गृहं गत्वा

न्या पतिको देखनेको आई ॥ ३७ ॥ या कारणते तेरी कन्याको पति अदृष्ट हो गयो नि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रय करके घर जायके प्रसाद पायके जो कदाचित् तेरी कन्या फिर आवे ॥ ३८ ॥ तो

प्रसादं च भुक्त्वा सायाति चेत्पुनः ॥ ३८ ॥ लब्धभर्त्रीं सुता साधो भविष्यति न संशयः ॥ कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगनमंडलात् ॥ ३९ ॥ क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा ॥ सा पश्चात्पुनरागत्य ददर्श सुजनं पतिम् ॥ ४० ॥ ततः

याकौं पति मिलै पतिको सुख होय वा कन्याने आकाशसे ऐसी वाणी सुनके ॥ ३९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बडी जल्दी घर जायके प्रसाद पावती भई सो वो कन्या फेर वहां आई और अपने सु जनपतिको देखती भई ॥ ४० ॥ तब कलावती कन्या अपने पितासे बोली अब घरको

कलावती कन्या जगाद पितरं प्रति ॥ इदानीं च गृहं याहि विलंबं कुरुषे कथम् ॥ ४१ ॥ तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं संतुष्टोऽभूद्वणिक्सुतः ॥ पूजनं सत्य देवस्य कृत्वा विधिविधानतः ॥ ४२ ॥ धनैर्बंधुगणैः

चलो बिलंब क्यों कर रहे हो ॥ ४१ ॥ ये वा कन्याको बचन सुनके वो वैश्यपुत्र साधु प्रसन्न भयो पाछे विधिविधानसे सत्यनारायणके पूजन करके ॥ ४२ ॥ भाईबंधुसहित अ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पने निजघरको आवता भयो पूर्णमासीको संक्रांतिको वो सत्यनारायणकी पूजन करतो भयो ॥ ४३ ॥ या लोकमें सुख भोगके अंतमें सत्यनारायणके श्रीवैकुंठलोकको गयो (कैसो

साधं जगाम निजमंदिरं ॥ पौर्णमास्यां चसंक्रांतौ कृतवान्सत्यपूजनम्॥४३॥इहलोकेसुखंभुक्त्वाचांते सत्यपुरंययौ ॥ (अवैष्णवानामप्राप्यं गुणत्रयवि-वर्जितम्)॥४४॥इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्य-

वो वैकुंठ है कि जो अवैष्णव हैं उनको वो लोक नहीं मिले है मायाकृत तीनों गुणोंसे रहित है) ॥ ४४ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे श्रीवृंदावननिवासीश्रीमद्रंगाचार्यशिष्यपंडित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषोत्तमरामानुजदाससूनुनारायणशास्त्रिविरचितायां भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्रीसूतजी बोले कि हे मुनिसत्तमहो ! सुनो और आगे कहते

नारायणव्रतकथायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ सूत उवाच ॥ अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमाः ॥ आसीत्तुंगध्वजो राजा प्रजापालनतत्परः ॥१॥ प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्त्वा दुःखमवाप सः ॥ एकदा

हैं प्रजापालनमें तत्पर एक तुंगध्वज नामकरकें राजा होतो भयो ॥ १ ॥ परंतु वाने सत्य-
नारायणको प्रसाद त्याग कीनो यासें दुःख को प्राप्त होतो भयो एक दिन वो बनमें जायके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत प्रकारके पशुअनको मारतो भयो ॥ २ ॥ पाछे आयके बटके मूलमें सत्यनारायणको पूजन देखतो भयो महासंतोषी भक्तियुक्त भाईबंधुसहित गोप वहां सत्यनारायणकी पूजन करतेहैं ॥ ३ ॥

स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान्पशून ॥ २ ॥ आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम्।गोपाःकुर्वंति संतुष्टा भक्तियुक्ताःसबांधवाः ॥ ३॥ राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गत्वा न ननामसः ॥ततो गोपगणाः सर्वे प्रसादं नृपसंनिधौ। ४ ।संस्थाप्यपुनरागत्य भुक्त्वा सर्वे यथे

राजा ने देखे परंतु गर्वके मारे पास न गयो नमस्कार न कीनो ता पाछे वो गोपोंके गण सब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसाद राजाके पास ॥ ४ ॥रखके पाछे आयके बडी प्रसन्नतासे आप प्रसाद पावते भये तापाछें प्रसादको त्यागके राजा दुःखको प्राप्त होतो भयो ॥ ५ ॥ वाके सौ पुत्र नाशहो गए और धन

प्सितम्।ततःप्रासादं संत्यज्यराजा दुःखमवापसः।५।
तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत् ॥ सत्य
देवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम् ॥ ६ ॥ अत
स्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम् ॥ मनसा तु
विनिश्चित्य ययौ गोपालसंनिधौ ॥ ७ ॥ ततोऽ

धान्यादिकभी नाश भयो वाको निश्चय भयो कि सत्यनारायणने सब नाश कीनो ये निश्चय है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ६ ॥ यातें अब वहांही जावेंगे जहां इनको पूजनहै मनसें निश्चय करके गोपालोंके पास राजा गयो ॥ ७ ॥ तब ये राजा सत्यनारायणकी पूजा गोपगणोंके साथ भक्तिश्रद्धासहित होयके विधि

सौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणैःसह ॥ भक्तिश्रद्धान्वितो भूत्वा चकार विधिना नृपः ॥ ८ ॥ सत्यदेवप्रसादेन धनपुत्रान्वितोऽभवत् ॥ इहलोके सुखं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं ययौ ॥ ९ ॥ य इदं कुरुते

सें राजा व्रत करतो भयो ॥ ८ ॥ सत्यनारायणकी कृपाकरके धन पुत्र याके होते भये या लोकमें सुखभोगो अंतमें सत्यनारायणके पुरकों जातो भयो ॥ ९ ॥ परमदुर्लभ जो ये सत्य-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारायणको व्रत याकों जो कोई करताहै भक्तियुक्तफलकी देनेवारी जो ये कथाहै याको जो कोई सुनता है ॥ १० ॥ ताके सत्यनारायणकी कृपाकरकें धन धान्यादिक सब होवेगो दरिद्री

सत्यव्रतं परमदुर्लभम् ॥ शृणोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम् ॥ १० ॥ धनधान्यादिकं तस्य भवेत्सत्यप्रसादतः ॥ दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्येत् बंधनात् ॥ ११ ॥ भीतो भयात्प्रमुच्येत सत्यमेव नसंशयः ॥ ईप्सितं च फलं भुक्त्वा

को धन प्राप्त होगो बंधन में जो होगा वाको बंधन छूटेगो ॥ ११ ॥ डरोभयो है वो डरसें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूटैंगो ये सत्यही सत्यहै यामें कुछ संदेह नहीं है मनवांछित फल भोगके वो सत्यनारायण के लोककों प्राप्त होवे है ॥ १२ ॥ हे ब्राह्मणहो ! ये सत्यनारायण को व्रत हमने तुमसें

चांतेसत्य पुरंव्रजेत् ॥ १२ ॥इति वःकथितंविप्राः सत्यनारायणव्रतम् ॥ यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः॥१३॥ विशेषतः कलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा ॥ केचित्कालं वदिष्यंति सत्यमीशं तमेव

कह्यो याको करकें सब दुःखों से मनुष्य छूट जावे है ॥ १३ ॥ विशेषकरकें कलियुगमें ये सत्यनारायण की पूजा फल देनेवारी है इन सत्यनारायण कों कोई मनुष्य काल कहेंगे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई सत्य कहेंगे कोई ईश कहेंगे ॥ १४ ॥ कोई सत्यदेव कहेंगे कोई सत्यनारायण कहेंगे नानारूप धारके सब को मनवांछित फल देतेहैं ॥ १५ ॥ कलियुगमें सत्यव्रतरूपी सनातन

च ॥ १४ ॥ सत्यनारायणं केचित्सत्यदेवं तथापरे ॥ नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सितप्रदः ॥ १५ ॥ भविष्यति कलौ सत्यव्रतरूपी सनातनः॥ श्रीविष्णुना धृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम् ॥ १६॥ य इदं पठते

सत्यनारायण होवेंगे और सबके मनवांछित फल देनेको श्रीविष्णुने ये सत्यनारायणको रूप धारण कीनोहै ॥ १६ ॥ हे मुनिसत्तमहो ! जो याको पढै जो याको नित्य सुनै वाके सत्यनारायण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कृपासें सब पाप नाश हो जातेहैं ॥ १७ ॥ हे मुनीश्वरो ! श्रीसत्यनारायणको व्रत जिन्होंने पहिले करोहो तिनके पीछेजो जन्महो सो कहितेहैं ॥१८॥ महाबुद्धिवान् शतानंद ब्राह्मण सुदामा

नित्यं शृणोति मुनिसत्तमाः ॥ तस्य नश्यंति पपानि सत्यदेवप्रसादतः ।७१। व्रतं यैस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च ॥ तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्वराः ।१८। शतानन्दो महाप्राज्ञः सुदामा ब्राह्मणो ह्यभूत् ॥ तस्मिञ्जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवापह ।१६।

नामक ब्राह्मणहोतोभयो वाजन्ममें श्रीकृष्णजीको ध्यान करके मोक्ष को प्राप्त होतो भयो॥१६॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काष्ठको बेचनेवारो वो भिल्ल गुहराजा भयो तिस जन्ममें श्रीरामचंद्रजीकी सेवा करके मोक्षको जातो भयो ॥ २० ॥ उल्कामुख जो महाराज है सो राजा दशरथ भयो अपने

काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूव ह ॥ तस्मिञ्जन्मनि श्रीरामं सेव्यमोक्षं जगाम वै ॥२० ॥ उल्कामुखो महाराजो नृपो दशरथोऽभवत् ॥ श्रीरंगनाथं संपूज्य श्रीवैकुंठं तदागमत्॥२१॥धार्मिकः

इक्ष्वाकुको जो अपने कुलगुरु श्रीरंगनाथजी तिनकी सम्यक् प्रकारसे पूजा करके श्रीबैंकुंठको जातो भयो ॥२१॥ धर्मात्मा सत्य बोलनेवारो साधु वैश्य मोरध्वज राजा होतोभयो अपनो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधो शरीर तरवारसे कटवायकै ब्राह्मणको दानकरके मोक्षको प्राप्त भयो ॥ २२ ॥ तुंगध्वज जो राजा है ये निश्चय करके स्वायंभू मनु होतो भयो सबको श्रीवैष्णवभागवत

सत्यसंधश्च साधुर्मौरध्वजोभवत् ॥ देहार्धं क्रकचै श्छित्त्वा दत्त्वा मोक्षमवापह ॥ २२ ॥ तुंगध्वजो महाराजः स्वायंभूरभवत्किल ॥ सर्वान् भागवतान् कृत्वा श्रीवैकुंठं तदागमत् ॥ २३ ॥ इति श्रीस्कंद पुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण कथायां पञ्च-

करके श्रीवैकुंठलोकको जातो भयो ॥ २३ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायणव्रत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथायां नारायणशास्त्रिविरचितायां भाषाटीकायां पंचमोऽध्यायः॥(वेदांतरूप जो कर्पूरसुवर्ण को डब्बारूप बडोंके शिरोमणिरूप ऐसेजो रामानुजस्वामी तिनको नित्य हम प्रणाम करैहैं॥१॥)

मोऽध्यायः ॥५॥ (बन्दे वेदांतकर्पूरचामीकरकरण्ड-कम् ॥ रामानुजार्यमार्याणां चूडामणिमहर्निशम्।१।

इदं पुस्तकं नीमच नगरे बाबू दीपचंद्रस्य प्रबन्धेन "मुलतान मल मुद्रण यंत्रालये"ऽङ्कितम् ॥ संवत् १९५६शाके १८२१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ विज्ञापन ॥

शीघ्रोदय चंडू पंचाङ्ग ।

हमारे यंत्रालय में चंडू पंचाङ्ग संवत् १९५७ का छप रहा है और शीघ्रही प्रकाशित होने वाला है । पंचाङ्ग शुद्धता एवम् स्वच्छता पूर्वक मुम्बई टाइप में सुन्दर काग़ज़ पर विद्वानों से शुद्ध कराके छाप रहे हैं। अतएव ग्राहक तथा व्यापारी महाशयों से निवेदन है कि हमारे चंडू पंचाङ्ग को खरीद कर अलभ्य लाभ उठावें और ऐसा अवसर हाथ से न जाने दें । इसके अतिरिक्त अब से प्रत्येक वर्ष का पंचाङ्ग हमारे यहां छपा करैगा ग्राहक तथा व्यापारी महाशयों को उचित् है कि हम से व्यवहार कर नित्य हमारा उत्साह बढ़ाते रहेंगे ।

पता—बाबू दीपचन्द मैनेजर "मुलतानमल प्रिंटिंग प्रेस" छावनी नीमच ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता—पुस्तकें मिलने का:—

बाबू दीपचन्द मैनेजर

"मुलतानमल प्रिण्टिंग प्रेस"

छावनी नीमच ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति सत्यनारायणकथाभाषाटीका समाप्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar